लोक महाकाव्य आल्हा

डॉ० गोविन्द रजनीश

Scanned with OKEN Scanner

ISBN 81-86294-01-5

प्रकाशक	□	**सत्येन्द्र प्रकाशन** 30 पुराना अल्लापुर इलाहाबाद - 211 006 दूरभाष : 605255
कापीराइट	□	डॉ० गोविन्द रजनीश
संस्करण	□	प्रथम 1995
मूल्य	□	दो सौ पचास रुपये मात्र
आवरण	□	इम्पैक्ट
लेजर कम्पोजिंग	□	**प्रयागराज कम्प्यूटर्स** 13 मोतीलाल नेहरू रोड इलाहाबाद - 211 002 दूरभाष : 600592
मुद्रण	□	**भार्गव आफसेट** 1 बाई का बाग इलाहाबाद - 211 003 दूरभाष : 605324

Scanned with OKEN Scanner

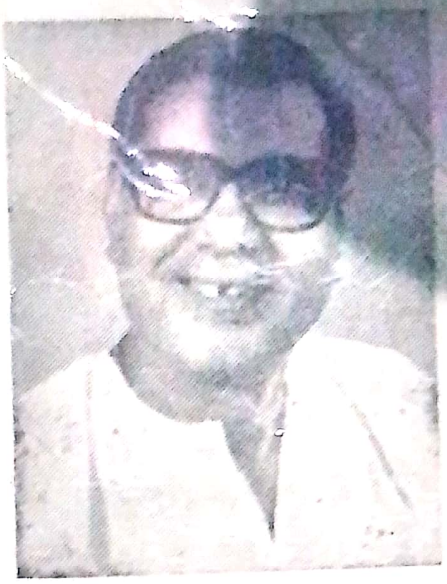

डॉ० गोविंद रजनीश

(पूरा नाम—डॉ० गोविंद प्रसाद शर्मा 'रजनीश')

जन्म 10 सितम्बर, 1938 को राजस्थान के वैर कस्बे में। राजस्थान विश्वविद्यालय से एम० ए०, आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० और डी० लिट्०। तीस वर्षों तक विश्वविद्यालयों में अध्यापन। जाने-माने आलोचक।

बीस पुस्तकें प्रकाशित। पत्र-पत्रिकाओं, आकाशवाणी और दूरदर्शन के लिए नियमित लेखन। 'रहीम ग्रंथावली', सत्यनारायण 'ग्रंथावली', 'रांगेय राघव का रचना संसार' और 'समकालीन हिन्दी कविता की संवेदना' पुरस्कृत एवं सम्मानित। अन्य रचनाएँ: 'साहित्य का सामाजिक यथार्थ', 'पुनर्श्चिंतन', 'समसामयिक हिन्दी कविता : विविध परिदृश्य', 'नयी कविता: परिवेश, प्रवृत्ति और अभिव्यक्ति', 'राजस्थान के पूर्वी अंचल का लोक साहित्य', 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता', 'आदि और मध्यकालीन फागु काव्य' और अब 'लोक महाकाव्य : आल्हा'। पुरान, नये साहित्य, पाठ-विज्ञान और लोक साहित्य में समान गति।

केन्द्रीय अकादमी द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन लिट्रेचर' के सभी खण्डों में लेखन। **सम्प्रति** : निदेशक; कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी शोध संस्थान, आगरा।

संपर्क : गोपाल कुंज
बाग मुजफ्फर खाँ, आगरा–282002

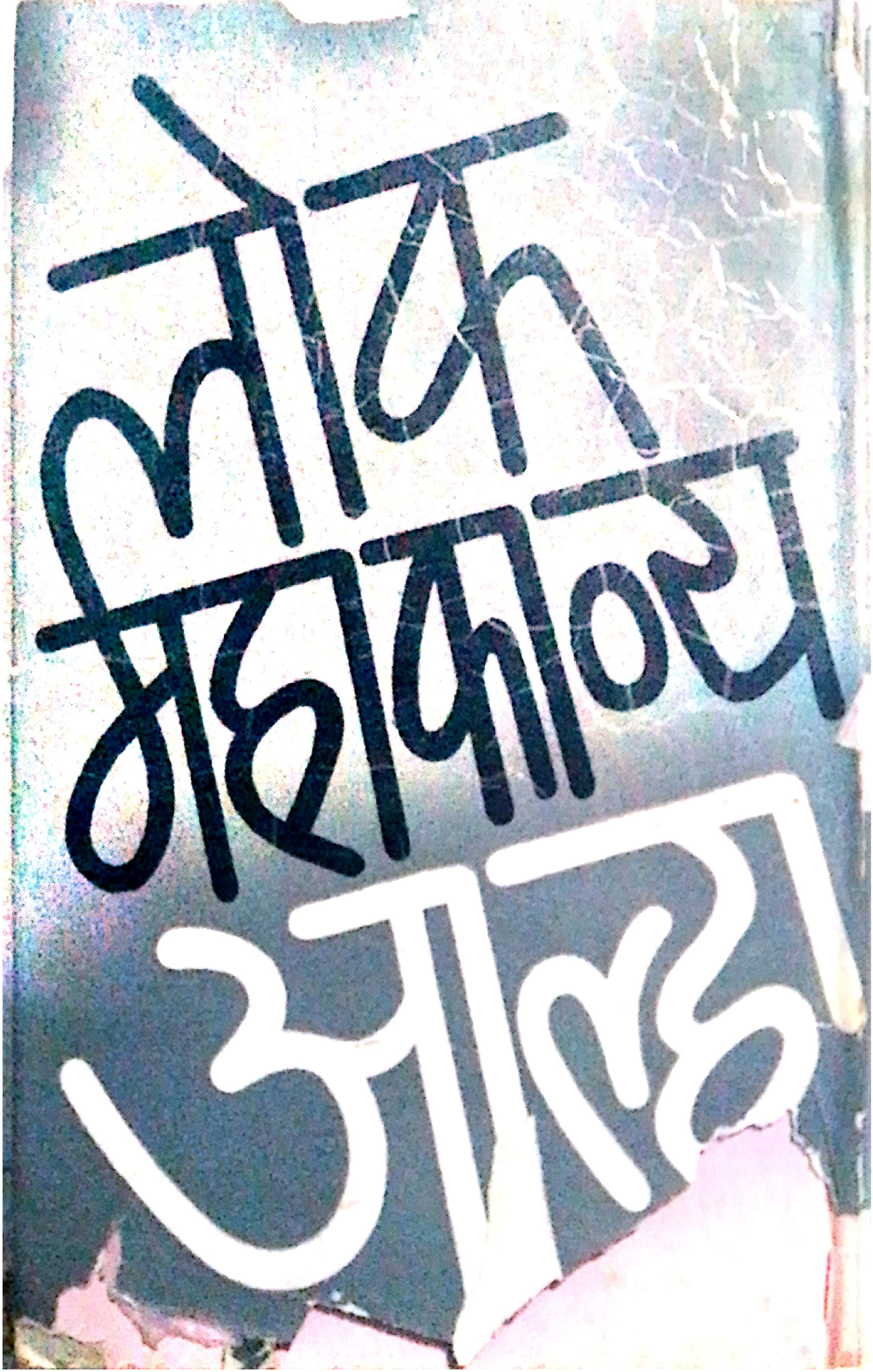

Scanned with OKEN Scanner

कीरत सागर के, पूर्वी किनारे पर निर्मित.
'ऊदल की बारादरी'
स्थान- महोबा (जिला- हमीरपुर, (उ०प्र०)

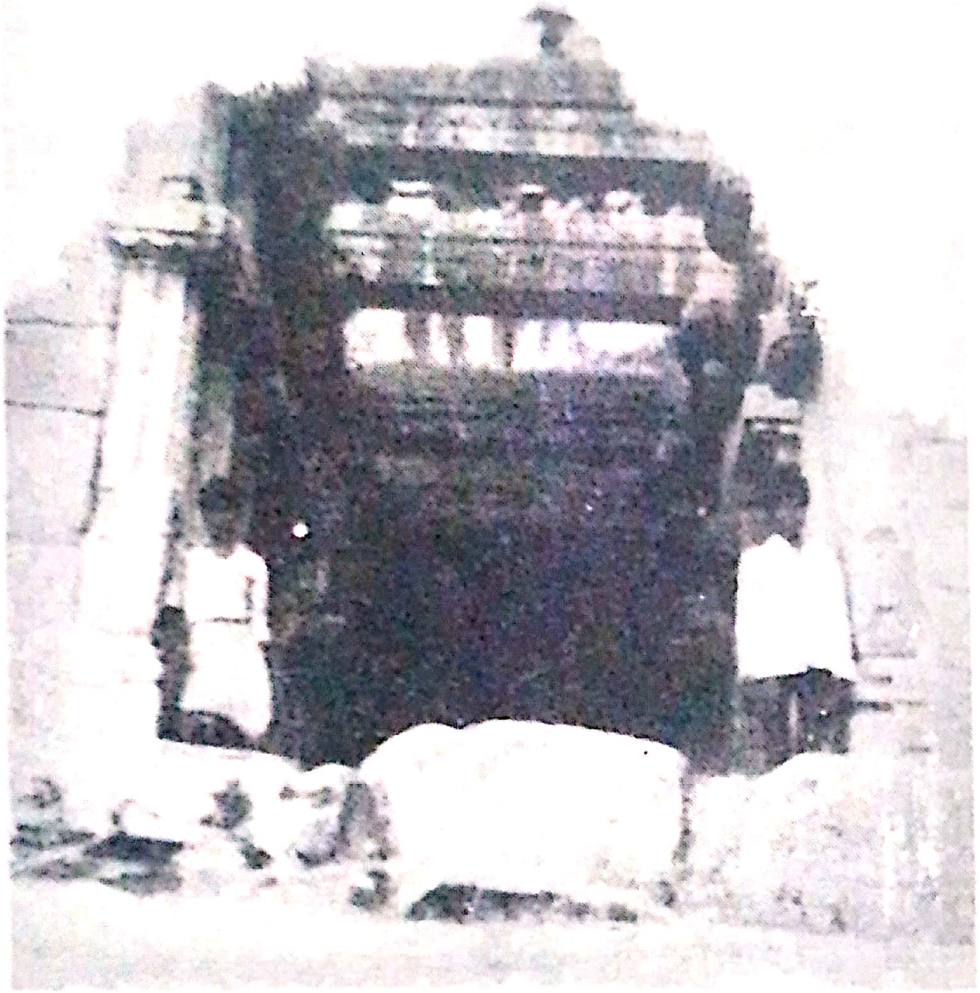

मदन सागर के मध्य निर्मित-

'आल्हा की इयोढ़ी'

स्थान - महोबा.

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

'नदी बेतवा का मैदान'

(उरई-महोबा के मध्य)

Scanned with OKEN Scanner

कीरत सागर के किनारे स्थित -
'वीर तालहा सैयद की मजार'
(स्थान - महोबा)

'कीरत सागर का मैदान'

स्थान- महोबा, हमीरपुर